SANKALP EK PRAYAS
SOCIETY, BHILAI

Monthly Newsletter

सफलता से सिद्धि तक

नवंबर 2025

जब नेतृत्व ने शिक्षा को रास्ता दिखाया

उफरा की सरपंच गायत्री साहू -

उफरा गाँव में ई-उड़ान डिजिटल कक्षा शुरू करने में एक बड़ी चुनौती सामने आई— स्कूल प्रबंधन ने सृजन कार्यक्रम के सामुदायिक स्वयंसेवकों को स्कूल परिसर में डिजिटल कक्षा चलाने की अनुमति नहीं दी। लेकिन यह बाधा सरपंच गायत्री साहू को रोक नहीं पाई। उन्होंने तुरंत स्वयं पहल करते हुए गाँव में एक सामुदायिक स्थान उपलब्ध कराया और वहाँ ई-उड़ान डिजिटल कक्षाएँ शुरू करवाई।

जब उन्होंने देखा कि कई अभिभावक बच्चों को भेजने में रुचि नहीं दिखा रहे हैं, तो गायत्री जी ने जिम्मेदारी खुद संभाली—उन्होंने घर–घर जाकर माता-पिता से बात की, बच्चों को बुलाया और खुद ही कक्षा लेकर डिजिटल शिक्षण की शुरुआत की। धीरे-धीरे बच्चे नियमित आने लगे, कक्षा में उत्साह और सीख दोनों बढ़ने लगे। जब उपस्थिति स्थिर हो गई और बच्चे सीखने के प्रति गंभीर दिखने लगे, तभी गायत्री साहू जी ने कक्षा संचालन की जिम्मेदारी वापस सृजन कार्यक्रम के सामुदायिक शिक्षकों को सौंप दी।

आज उफरा गाँव में ई-उड़ान डिजिटल कक्षाएँ नियमित रूप से चल रही हैं और कक्षा 6 से 8 के 35 बच्चे गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सीख से जुड़ चुके हैं।

यह कहानी साबित करती है कि - ***"सही नेतृत्व बाधाओं को नहीं देखता, रास्ते बनाता है।"***

" सीख फेलोज़ बने बदलाव के वाहक"

नवंबर में SEEKH के 19 फेलोज़ ने मुक्तांगनों में विशेष प्रशिक्षण लिया—एक ऐसा अनुभव जिसने उनकी शिक्षण सोच और शैली दोनों को गहराई से बदला। यह प्रशिक्षण सिर्फ कक्षाओं का नहीं, बल्कि समझ, संवेदनशीलता और नए दृष्टिकोण का था।

फेलोज़ को Foundational Teaching Methodology को और प्रभावी बनाने के लिए CUD Meetings, Critical Thinking और Curriculum Development जैसे विषयों पर सशक्त मार्गदर्शन मिला।

उन्होंने सीखा कि—

- बच्चा कैसे सोचता है
- सीख को गतिविधियों में कैसे बदला जाए
- और कैसे "क्यों?" पूछना बच्चों में जिज्ञासा और समझ दोनों को बढ़ाता है।

"अब मैं पढ़ाना नहीं, सीखने की इच्छा जगाना समझती हूँ।"

(सपना गिरी)

इस प्रशिक्षण के बाद फेलोज़ की कक्षाएँ और अधिक child-friendly, engaging और structured बनेंगी। इन 19 फेलोज़ की यह नई सीख अब हजारों बच्चों तक पहुँचेगी—यही है SEEKH का असली प्रभाव।

“अविष्कार की पाठशाला

सृजन के नए फेलोज़ की पहली सीख यात्रा”

नवंबर का महीना सृजन के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण रहा। 25 नए सृजन फेलोज़ ने अपने पहले प्रशिक्षण अनुभव में हिस्सा लिया—एक ऐसा अनुभव जिसने उनके भीतर शिक्षक के रूप में एक नई पहचान और आत्मविश्वास जगाया। यह प्रशिक्षण अविष्कार टीम द्वारा संचालित था, जो ग्रामीण विज्ञान–गणित शिक्षा में अपने नवाचारपूर्ण काम के लिए जानी जाती है। पहली बार प्रशिक्षण लेने आए सभी नए फेलोज़ के लिए यह सिर्फ एक सत्र नहीं, बल्कि “सीखने के नए संसार” का दरवाज़ा था।

प्रशिक्षण का मुख्य फोकस: गणित को समझ से जोड़नाप्रशिक्षण का केंद्र बिंदु था— गणित के बुनियादी सिद्धांतों को बच्चों की भाषा में, जीवन से जोड़कर कैसे समझाया जाए।

फेलोज़ ने सीखा कि—

- संख्या, भिन्न, लम्बाई, क्षेत्रफल जैसे basic concepts को कैसे सरल और दृश्य रूप में समझाया जा सकता है
- बच्चे गणित को क्यों कठिन मानते हैं, और उस डर को कैसे कम किया जाए
- त्रुटियों को “गलतियाँ” नहीं, बल्कि “समझने के अवसर” कैसे बनाया जाए
- TLM और स्थानीय सामग्री के माध्यम से गणित को खेल–खेल में कैसे सिखाया जाए

अविष्कार टीम ने हर कांसेप्ट को गतिविधि, कहानी और उदाहरणों के साथ समझाया—जिससे फेलोज़ ने महसूस किया कि गणित मुश्किल नहीं, बस गलत तरीके से समझाई गई भाषा है।

एक नया अनुभव, नई दृष्टि

अधिकांश फेलोज़ के लिए यह पहला औपचारिक प्रशिक्षण था। कई ने स्वीकार किया कि वे खुद भी गणित के कुछ कांसेप्ट को नए नज़रिए से समझ पाए।

“मैंने कभी नहीं सोचा था कि fractions को लकड़ी की कड़ियों से भी सिखाया जा सकता है। अब कक्षा में बच्चे खुद fraction ‘बना’ पाएँगे।”...(पूनम – कुरूद)

इस प्रशिक्षण ने उनकी झिझक कम की, आत्मविश्वास बढ़ाया और अपनी आने वाली कक्षाओं की तैयारी को और स्पष्ट किया।

प्रशिक्षण के बाद SRIJAN फेलोज़ में साफ़ बदलाव दिखाई दिया—

- कक्षा के लिए साफ़ और व्यवस्थित योजना
- चाइल्ड सेंट्रिक गतिविधियाँ
- गणित को अनुभव आधारित बनाने की क्षमता
- सीख को स्थानीय जीवन से जोड़ने की दृष्टि

अब ये 25 नए फेलोज़ अपने-अपने गाँवों में सैकड़ों बच्चों को गणित को सरल, मजेदार और समझने योग्य रूप में सिखाने के लिए तैयार हैं।

“जब गाँव आगे आया शिक्षा की रोशनी स्वयं जगाई”

जब समुदाय किसी पहल को अपना मान लेता है, तो बदलाव सिर्फ होता नहीं—दौड़कर आता है। SEEKH कार्यक्रम में इस माह गाँवों ने जिस स्तर का सहयोग दिया, उसने पूरे प्रोजेक्ट को नई ऊर्जा और नई दिशा दी। इस महीने समुदाय ने बच्चों की सीख की निरंतरता बनाए रखने के लिए 51 सामुदायिक भवन, 104 स्कूल परिसर और 21 घर-आधारित केंद्र उपलब्ध कराए, और कई स्थानों पर केवल जगह ही नहीं दी—बल्कि साफ-सफाई, रोशनी, बैठने की व्यवस्था और समय प्रबंधन की जिम्मेदारी भी स्वयं निभाई।

अचनाकपुर—एक गाँव जिसने बदलाव को खुद जन्म दिया

अचनाकपुर में शुरुआत में विद्यालय स्तर पर डिजिटल कक्षाएँ शुरू करने में अनुमति की चुनौती आई। लेकिन इस बार गाँव ने इंतज़ार नहीं किया। कुछ ही दिनों में गाँव की महिलाओं, युवाओं और अभिभावकों ने मिलकर निर्णय लिया— “बच्चों को रुकना नहीं चाहिए। अगर सुविधा नहीं मिल रही, तो हम स्वयं बनाएँगे।” उन्होंने स्कूल प्रबंधन से दोबारा संवाद किया, और जब संसाधन की कमी सामने आई, तो "संकल्प एक प्रयास" द्वारा LED प्रदान कर, कक्षा शुरू करा दी। तीन दिनों के अंदर पहली डिजिटल क्लास चालू हो चुकी थी। बच्चों की उपस्थिति बढ़ी, उत्साह दोगुना हो गया और अचनाकपुर पूरे जिले के लिए एक प्रेरक उदाहरण बन गया।

“डिजिटल पढ़ाई बच्चों के लिए जरूरी है। अगर वे आगे बढ़ेंगे, तो हमारा गाँव भी आगे बढ़ेगा।”

—अचनाकपुर की महिला समिति सदस्य

यह कहानी सिर्फ एक गाँव की नहीं—एक दृष्टि की है...

आज 176 से अधिक E-Merge केंद्रों के संचालन में समुदाय की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। जहाँ प्रशासनिक चुनौतियाँ थीं, वहाँ समुदाय ने रास्ता बनाया। जहाँ संसाधन कम थे, वहाँ लोगों ने मिलकर उन्हें जुटाया। अचनाकपुर की कहानी ने यह सिद्ध कर दिया— कि शिक्षा तभी स्थिर होती है जब समुदाय उसका प्रहरी बनकर खड़ा हो जाता है।

“बेहतर कल के लिए एक वचन”

गरिमा फेलोज़ ने राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे बाल-विवाह उन्मूलन अभियान में सक्रिय भूमिका निभाई—एक ऐसी भूमिका जिसने न सिर्फ जागरूकता फैलाई, बल्कि गाँवों में जिम्मेदारी और सामूहिक संकल्प की नई लहर भी पैदा की। इस अभियान के तहत फेलोज़ ने 29 स्कूलों में कार्यशालाएँ आयोजित कीं, जहाँ 1841 बच्चों ने बाल विवाह के जोखिम, इसके प्रभाव, और “ना कहना” क्यों महत्वपूर्ण है—इस पर खुलकर बातचीत की। बच्चों ने पहली बार समझा कि उनका सपना, उनका भविष्य और उनकी शिक्षा किसी भी सामाजिक दबाव से ज्यादा कीमती है।

इसी के साथ, समुदाय-आधारित 20 गरिमा मंच बैठकों में 238 महिलाओं ने भाग लिया—जहाँ माताओं ने एक-दूसरे के साथ यह साझा किया कि उनकी बेटियों की पढ़ाई और सुरक्षा सबसे बड़ी प्राथमिकता है।

फेलोज़ ने पंचायत प्रतिनिधियों और स्थानीय नेतृत्व को भी जोड़ा—16 पंचायतों और 229 PRI सदस्यों ने अभियान की जिम्मेदारी अपने हाथ में लेते हुए यह स्वीकार किया कि बाल विवाह को रोकना केवल घर की या स्कूल की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे गाँव का कर्तव्य है।

सबसे प्रभावशाली क्षण था— जब बच्चों, महिलाओं, पंचायत सदस्यों और PRI प्रतिनिधियों ने मिलकर खुलेआम शपथ ली:

“हम अपने गाँव में बाल विवाह नहीं होने देंगे।
हम हर बच्चे के अधिकार—पढ़ाई, सुरक्षा और सपनों की रक्षा करेंगे।”

फेलोज़ के मार्गदर्शन में बने इस सामूहिक वातावरण ने गाँवों में नई ऊर्जा जगाई—बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ा, महिलाओं ने अपनी आवाज़ मजबूत की,और पंचायतों ने जागरूकता को एक मिशन की तरह अपनाया। इस अभियान ने साबित किया कि बदलती सोच का पहला कदम कभी-कभी बस एक युवा फेलो होता है,

जो गाँव की चौपाल में खड़े होकर कहता है— “किसी बच्चे का बचपन छिनने नहीं देंगे।”

“धरती, संस्कृति और पढ़ाई
छत्तीसगढ़ स्थापना दिवस”

इस वर्ष SEEKH और SRIJAN कार्यक्रमों में 450 से अधिक LRCs ने छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस को केवल सांस्कृतिक आयोजन के रूप में नहीं, बल्कि एक शैक्षणिक अनुभव के रूप में मनाया। इस उत्सव में 20,000 से अधिक बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया—जहाँ कला, संस्कृति, प्रकृति और पढ़ाई एक खूबसूरत धागे में बंधकर सामने आए।

फेलोज़ और शिक्षकों ने इस दिन को ***Academic Promotional Activity*** में बदलते हुए बच्चों को छत्तीसगढ़ की समृद्ध पहचान— लोकनृत्य, तीजा-पोरा, जंगल, धान, लोककथाएँ, मृदा-कला और बस्तर के रंग—इन सबको चित्रकला, पोस्टर निर्माण, कहानी लेखन, नक्शा गतिविधियों और समूह-चर्चाओं के माध्यम से सीख से जोड़ने का अवसर दिया।

कई बच्चों ने “मोर छत्तीसगढ़” थीम पर अपने गाँव की कला, जीवन और परंपराओं को चित्रों और मॉडल्स के माध्यम से प्रस्तुत किया। मिट्टी की कला ने बच्चों को ***Shapes, Patterns*** और ***Measurements*** समझने में मदद की, और लोककथाओं ने भाषा, अभिव्यक्ति और रचनात्मक लेखन को मजबूत किया।

इस आयोजन का सबसे सुंदर परिणाम था—बच्चों ने अपनी संस्कृति, अपने परिवेश और अपनी पढ़ाई के बीच का संबंध स्वयं खोजा। वे समझ पाए कि शिक्षा सिर्फ किताबों तक सीमित नहीं है; यह उनकी जमीन, उनके अनुभव और उनकी जड़ों से भी उतनी ही गहराई से जुड़ी है।

SEEKH और SRIJAN के लिए यह दिन इस बात की पुष्टि था कि—जब शिक्षा संस्कृति का हाथ थाम लेती है, तो बच्चों की सीख न केवल बढ़ती है, बल्कि उनकी पहचान, आत्मविश्वास और समझ को भी नया आकार देती है।

“शिक्षा पर संवाद
राष्ट्रीय शिक्षा दिवस पर गाँवों में जागी नई सोच”

— National Education Day Celebration
Community Engagement Story

इस वर्ष राष्ट्रीय शिक्षा दिवस SEEKH–SRIJAN कार्यक्रमों के लिए सिर्फ एक स्मरण दिवस नहीं, बल्कि शिक्षा पर गहरे सामुदायिक संवाद का अवसर बन गया। गाँव–गाँव में आयोजित विशेष सत्रों ने अभिभावकों, समुदाय और स्थानीय नेतृत्व को बच्चों की शिक्षा पर गंभीरता से बात करने का मंच दिया।

पूरे क्षेत्र में 217 शिक्षा-संवाद सत्र आयोजित किए गए, जिनमें 2000 से अधिक अभिभावक और समुदाय सदस्य शामिल हुए। इन बैठकों में ABG Support Group और Village Education Committee (VLEC) के सदस्यों ने सक्रिय रूप से हिस्सा लेते हुए यह चर्चा की कि— बैठकों में समुदाय ने बच्चों की शिक्षा से जुड़े प्रमुख मुद्दों पर चर्चा की—वे क्यों अनियमित रहते हैं, पढ़ाई में कौन-सी रुकावटें आती हैं, घर पर सीखने का माहौल कैसे बनाया जाए, डिजिटल व अकादमिक सहयोग कैसे मजबूत हो, और बच्चों की शिक्षा को सुरक्षित रखने में समुदाय की भूमिकाएँ क्या हो सकती हैं।

कई गाँवों में पहली बार माता–पिता ने खुले तौर पर अपनी चुनौतियाँ साझा कीं—कुछ बच्चों को काम पर भेजने की मजबूरी, कुछ के पास पढ़ने की जगह का अभाव, तो कहीं तर्कशक्ति व भाषा सीखने में कठिनाइयों की बात। इन बातचीतों ने ABG समूहों और VLEC को बच्चों की शिक्षा में सक्रिय भागीदारी का वास्तविक महत्व समझाया।

कई समितियों ने तुरंत कार्य योजनाएँ बनाई— कहीं घर-घर मोहल्ला कक्षा तय हुई, कहीं सामुदायिक अध्ययन स्थल बनाया गया, तो कहीं अभिभावक समूह ने बच्चों की उपस्थिति सुधारने की जिम्मेदारी ली।

सबसे बड़ी बात—इन संवादों ने बच्चों के लिए शिक्षा को साझी जिम्मेदारी बना दिया। राष्ट्रीय शिक्षा दिवस पर बना यह वातावरण इस बात का प्रमाण है कि जब समुदाय खुद शिक्षा पर बात करता है, तो बदलाव सिर्फ चर्चा नहीं रहता—एक सामूहिक संकल्प बन जाता है।

“विज्ञान का सफर
सृजन फेलोज़ ने जगाई बच्चों में जिज्ञासा की लौ”

— World Science Day Celebration | SRIJAN LRCs

World Science Day इस वर्ष SRIJAN कार्यक्रम के लिए सिर्फ एक गतिविधि नहीं, बल्कि बच्चों में वैज्ञानिक सोच और तर्क की समझ विकसित करने का अवसर बन गया। फेलोज़ ने इस दिन को प्रयोगों, मॉडल-निर्माण और वैज्ञानिक बातचीत के माध्यम से सीख और खोज का उत्सव बना दिया।

इस विशेष आयोजन में 44 LRCs के 66 बच्चों ने भाग लिया। हर केंद्र पर बच्चों को छोटे-छोटे विज्ञान प्रोजेक्ट विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया—कहीं सरल मशीनें बनीं, कहीं जल-संरक्षण के मॉडल, तो कहीं ऊर्जा, गति और संतुलन के छोटे प्रयोगों ने बच्चों को चकित कर दिया।

फेलोज़ ने बच्चों को समझाया कि विज्ञान सिर्फ किताबों में नहीं होता—यह हमारे रोज़मर्रा के जीवन में मौजूद हर सवाल से जुड़ा है। उन्होंने बच्चों को “क्यों? कैसे? किसलिए?” जैसे प्रश्न पूछने की आदत विकसित कराई,
और वैज्ञानिक तर्क (scientific reasoning) को सरल भाषा में समझाया।

इस प्रक्रिया ने बच्चों में अवलोकन, पूर्वानुमान, प्रयोग करने और परिणामों को समझने जैसी बुनियादी वैज्ञानिक क्षमताओं को विकसित किया, जिससे उनका वैज्ञानिक तर्क और जिज्ञासा दोनों मजबूत हुए।

सबसे सुंदर पल तब आया जब एक बच्चे ने अपने मॉडल की ओर इशारा करते हुए कहा—

“अब विज्ञान मुश्किल नहीं लगता… अब तो मज़ा आ रहा है!”

World Science Day ने यह स्पष्ट कर दिया कि जब बच्चों को अवसर, मार्गदर्शन और प्रयोग की स्वतंत्रता मिलती है, तो विज्ञान उनके लिए किताब का विषय नहीं रह जाता— एक रोमांचक खोज-यात्रा बन जाता है।

“बचपन का उत्सव
सीख, विज्ञान और जागरूकता का संगम”

बाल दिवस – 14 नवम्बर | SEEKH • SRIJAN • GARIMA

इस वर्ष बाल दिवस ग्रामीण क्षेत्रों में सिर्फ एक उत्सव नहीं, बल्कि सीख, रचनात्मकता और जागरूकता का एक बड़ा अभियान बन गया। SEEKH, SRIJAN और GARIMA—तीनों कार्यक्रमों ने अपने-अपने तरीके से बच्चों के अधिकार, उनकी आवाज़ और उनकी रचनात्मक क्षमता को मंच देने का प्रयास किया।

SEEKH और SRIJAN: TLM मेला— जब पढ़ाई खेल और कला से जुड़ गई

SEEKH और SRIJAN LRCs में बाल दिवस को TLM मेला के रूप में मनाया गया, जहाँ बच्चों ने स्वयं गणित–विज्ञान के मॉडल, कहानी कार्ड, भाषा खेल और स्थानीय सामग्री से सीखने के उपकरण तैयार किए। इस मेले ने बच्चों को समझाया कि पढ़ाई केवल किताबों में नहीं, बल्कि बनाने, देखने और अनुभव करने से गहराई से सीखी जाती है।

GARIMA: अधिकारों की आवाज़—
किशोर सभा ने बदला गाँव का माहौल

GARIMA कार्यक्रम ने बाल दिवस को जागरूकता और अधिकार संरक्षण का महत्वपूर्ण मंच बनाया, जहाँ किशोर सभाओं के नेतृत्व में 300 से अधिक समुदायों में बाल अधिकार, बाल सुरक्षा, बाल विवाह रोकथाम और शिक्षा व सपनों के महत्व पर प्रभावी संवाद और नुक्कड़-नाटक आयोजित की गई।

अभूतपूर्व सहभागिता—**25,000+ बच्चों की उपस्थिति**

इन संयुक्त उत्सवों में SEEKH, SRIJAN और GARIMA के 25,000 से अधिक बच्चों ने सक्रिय भाग लिया और सीखने, अभिव्यक्ति और जागरूकता से जुड़े अनुभवों से लाभान्वित हुए। TLM मेले ने बच्चों को रचनात्मक सोच से जोड़ा, और नाटकों ने उन्हें समझाया कि उनके अधिकार और उनकी आवाज़ कितनी महत्वपूर्ण है।

"पहली बार लगा कि हम भी अपने गाँव में बदलाव ला सकते हैं।"...

पलक (किशोर सभा सदस्य)

बाल दिवस ने इस वर्ष यह साबित किया कि जब शिक्षा, रचनात्मकता और जागरूकता एक साथ जुड़ते हैं, तो बच्चों का उत्सव सिर्फ खुशियों का नहीं, भविष्य को सुरक्षित और सशक्त बनाने का माध्यम बन जाता है।

सशक्त नारी, सतर्क समाज! NSPCL के प्रयास से ग्रामीण महिलाओं में जगी
'जागरूकता' की अलख

भ्रष्टाचार मुक्त भारत की ओर बढ़ा कदम: सोमनी और मोरिद में महिलाओं ने ली ईमानदारी और सतर्कता की शपथ

(सोमनी / मोरिद) – राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम-सेल पावर कंपनी लिमिटेड (NSPCL) के 'निवारक सतर्कता पर त्रैमासिक अभियान' के तहत हाल ही में दो महत्वपूर्ण गाँवों—सोमनी और मोरिद—में ग्रामीण महिलाओं के लिए विशेष जागरूकता कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया गया।

यह पहल 'संकल्प एक प्रयास' के 'गरिमा प्रोजेक्ट' के अंतर्गत 'गरिमा मंच' पर आयोजित की गई, जिसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक और डिजिटल रूप से सशक्त और सतर्क बनाना है।

कार्यक्रम की तिथियाँ ,स्थल और मुख्य फोकस

सोमनी
31 अक्टूबर, 2025
ईमानदारी और भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज़

मोरिद
10 नवंबर, 2025
साइबर अपराधों से सतर्कता और सुरक्षा

ईमानदारी और सतर्कता की प्रेरणा

कार्यक्रम के दौरान, विशेषज्ञों ने ग्रामीण महिलाओं को उन क्षेत्रों के बारे में विस्तार से बताया जहाँ उन्हें विशेष रूप से सतर्क रहने की आवश्यकता है। मुख्य बिंदुओं पर जोर दिया गया:

ईमानदारी से कार्य : महिलाओं को अपने दैनिक जीवन और कार्यों में पूर्ण ईमानदारी बनाए रखने के लिए प्रेरित किया गया। यह संदेश दिया गया कि एक छोटा सा ईमानदारी कदम भी समाज में बड़ा बदलाव ला सकता है।

भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज़ : उन्हें यह सिखाया गया कि भ्रष्टाचार को किसी भी स्तर पर सहन न करें और इसके खिलाफ निडर होकर आवाज उठाएँ। मंच ने महिलाओं को बताया कि वे केवल मूक दर्शक नहीं, बल्कि परिवर्तन की सबसे बड़ी शक्ति हैं।

साइबर सुरक्षा : वर्तमान डिजिटल युग में, महिलाओं को विशेष रूप से साइबर अपराधों जैसे - ऑनलाइन धोखाधड़ी, फिशिंग, और व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा के खतरों से आगाह किया गया। उन्हें डिजिटल लेनदेन और सोशल मीडिया का उपयोग करते समय अत्यधिक सतर्क रहने के टिप्स दिए गए।

श्रोताओं को संदेश: आप समाज की आधारशिला हैं!

कार्यक्रम का समापन एक सामूहिक संकल्प के साथ हुआ, जहाँ सभी महिलाओं ने ईमानदारी के मार्ग पर चलने, भ्रष्टाचार का विरोध करने और हर प्रकार की धोखाधड़ी से स्वयं और अपने समुदाय को बचाने का प्रण लिया।

यह कार्यक्रम यह दर्शाता है कि जब महिलाएं जागरूक होती हैं, तो एक सशक्त, सुरक्षित और भ्रष्टाचार-मुक्त समाज का निर्माण संभव हो जाता है।

SEP की गतिविधियाँ और कवरेज"

(November month updates)

सीख : प्रोग्राम

फेलो	: 48
सामुदायिक शिक्षक	: 640
लर्निंग रिसोर्स सेंटर	: 247 (13301 छात्र)
ई-मर्ज (डिजिटल कक्षाएं)	: 176
विलेज लेवल शिक्षा समिति (ABG सपोर्ट समूह)	: 217
सीख पीयर लीडर	: 1239
नवोदय प्रयासरत छात्र	: 1900
सहभागी पालक	: 4365

सृजन: प्रोग्राम

फेलो	: 44
सामुदायिक शिक्षक	: 432
लर्निंग रिसोर्स सेंटर	: 244 (7989 छात्र)
ई-उड़ान (डिजिटल कक्षाएं)	: 50
विलेज लेवल शिक्षा समिति	: 10
सृजन पीयर लीडर	: 390
NMMSE प्रयासरत छात्र	: 1077
सहभागी पालक	: 502
स्टेम वर्कशॉप	: 203 (2001 छात्र)
कंप्यूटर लैब	: 15 (973 छात्र)
होम विजिट	: 250

गरिमा : प्रोग्राम

फेलो	: 45
गरिमा मंच	:146 (7000 प्रतिभागी)
स्कूल कार्यशाला	: 193 (13896 छात्र)
किशोर सभा	: 98 (1470 छात्र सदस्य)
ABG सपोर्ट समूह	: 15 (300 प्रतिभागी)
होम विजिट	: 306
जागरूकता कार्यक्रम (नुक्कड़-नाटक)	: 49 सत्र (5000 प्रतिभागी)
गरिमा पीयर एजुकेटर	: 100
SBI छात्रवृति सहयोग	: 68
SIR सहयोग	: 310 परिवार
बाल विवाह मुक्त ग्राम	: 123

प्रिय पाठकों,

नवंबर का महीना संकल्प एक प्रयास के लिए प्रेरक और उपलब्धियों से भरा रहा। उफरा जैसी कहानियों ने दिखाया कि सही नेतृत्व कैसे डिजिटल शिक्षा के नए रास्ते खोल सकता है, जबकि हमारे फेलोज़ के प्रशिक्षण ने आने वाली कक्षाओं में बच्चों की शिक्षा की गुणवत्ता को और मजबूत किया। बाल दिवस, राज्य स्थापना दिवस और राष्ट्रीय शिक्षा दिवस पर आयोजित गतिविधियों ने 25,000 से अधिक बच्चों और हजारों समुदाय सदस्यों को सीख, संस्कृति और जागरूकता के अवसर दिए।

इस महीने समुदाय ने सक्रिय रूप से साथ आकर शिक्षा को साझा जिम्मेदारी बनाया—चाहे बाल विवाह रोकथाम हो, डिजिटल कक्षाओं का संचालन, विज्ञान दिवस गतिविधियाँ या TLM मेला। यह भरोसा और सहभागिता ही हमारी सबसे बड़ी पूँजी है।

आप सभी के सहयोग और विश्वास के लिए हार्दिक धन्यवाद।
आइए, मिलकर हर बच्चे के लिए सुरक्षित, सम्मानपूर्ण और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करें।

परिमल सिन्हा,
संस्थापक- संकल्प एक प्रयास

हमरे सहयोगी संस्थाएं

- Caring Friends – Helping Good NGOs Perform Better – MUMBAI
- SARDA – SARDA ENERGY & MINERALS LTD.
- DONATEKART
- Arpan Foundation
- Asha for Education – Bringing hope through education
- muktangan – learning & growing together
- आविष्कार – गणित-विज्ञान की एक प्रयोगशाला – Aavishkaar – Center for Science, Math, Arts and Technology
- phf Paul Hamlyn Foundation
- INVOLVE – Building Tomorrow
- VIKAS SAMVAD
- अध्ययन ADHYAYAN

SANKALP EK PRAYAS
SOCIETY, BHILAI

Sankalp ek prayas, Virat Nagar, Utai, Durg (C.G.)
Email : sankalpekprayas@gmail | Web : www.sankalpekprayas.org

Follow us on : @SankalpEkPrayas-s4i @SANKALPEK_PRAYAS